6

''यहोवा के भवन का पर्वत''

''अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, ...'' (यशायाह 2:2)।

परमेश्वर के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा इच्छा के बारे में अच्छी तरह से जो कुछ भी जाना जा सकता है, उसका उसके वचन बाइबल से ही पता चलता है। परन्तु इस सच्चाई से परमेश्वर के विषय में महत्वपूर्ण सामान्य सच्चाइयों को भी नज़रअन्दाज नहीं करना चाहिए, जो हमें उसकी दूसरी पुस्तक अर्थात संसार या प्रकृति में मिलती हैं।

परमेश्वर की एक विशेष बात हमें अपने इर्द-गिर्द के संसार से मिलती है कि वह सुन्दरता से प्रेम करता है। यह बात हमें रंग-बिरंगे मोरों और इतराते हुए बर्फ से ढके पहाड़ों से जिनका निचला भाग हरियाली और ऊपरी भाग नीली छटा बिखेरता है, पता चलती है। यह विशेषता हमें एक काले मखमली कज़्बल में जड़े हीरों की तरह चमकने वाले तारों से सजे आकाश के काले तज़्बू द्वारा बताई जाती है। यह हर रंग और आकार के नीलक वृक्षों, गुलाबों, लिली के फूलों, आर्किडों और बागों, पहाड़ियों, घाटियों तथा चरागाहों की शोभा बढ़ाने वाले असंज्य फूलों से पता चलता है। ऐसा कौन है जो हमारे संसार की इन भांति-भांति की विशेषताओं को देखे और यह निष्कर्ष न निकाले कि यह मनोहरता और सुन्दरता परमेश्वर को भाती है?

परमेश्वर का यह विशेष गुण न केवल भौतिक संसार में मिलता है बल्कि आत्मिक क्षेत्र में इससे भी अधिक स्पष्ट है। पवित्र शास्त्र का अवलोकन करके हम यह भी जान सकते हैं कि परमेश्वर का प्रतिदिन का अर्थात अनुग्रह का निरन्तर परिश्रम मनमोहक लोग बनाना है। यह सही है कि वह सुन्दर *वस्तुओं* से प्रेम रखता है, परन्तु इससे भी बड़ा सत्य यह है कि वह सुन्दर *लोगों* को पसन्द करता है। परमेश्वर पापी से प्रेम करता है परन्तु, जैसे किसी ने कहा है, ''उससे अपने प्रेम के कारण वह उसे वैसा ही नहीं रहने देना चाहता।'' परमेश्वर अपने अनुग्रह के कारण पापी को एक मनमोहक अर्थात मसीह जैसा व्यक्ति बनाने के लिए यीशु के द्वारा नीचे तक पहुंच जाता है।

परमेश्वर के इस गुण के प्रकाश में, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणी में इस्राएल के अर्थात कलीसिया के भविष्य को परमेश्वर के महिमामय भवन के रूप में चित्रित किया जो सुसज्जित है (यशायाह 2:2-4)। उसका रूपक कलीसिया निष्क्रिय,

अर्थात पत्थर की इमारत नहीं बल्कि एक जीवित पहाड़ है जो इसे देखने वाले असंख्य लोगों के मनों को आकर्षित करता है।

तर्क दिया जा सकता है कि यशायाह में दिया गया यह हवाला कलीसिया से सम्बन्धित नहीं है। बाबुल की दासता के बाद यरूशलेम के फिर से बनाए जाने की एक भविष्यवाणी की गई है। भविष्यवाणी का अर्थ शायद दोहरा है: एक तो *उस दिन* अर्थात निर्वासन के बाद यरूशलेम का भौतिक रूप से फिर से बनना और *बाद के एक दिन* अर्थात पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया की स्थापना। परन्तु इस भविष्यवाणी की आयत 2 के ''अन्त के दिनों'' वाक्यांश को कलीसिया की स्थापना के अलावा दूसरी बात पर लागू करने के लिए यशायाह की पुस्तक में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है। इसे केवल ज़रूब्बाबेल, एज्रा और नहेमायाह के समय में यरूशलेम के दोबारा बनाए जाने के लिए पुराने व नये दोनों नियमों में कलीसिया के विषय में सम्माननीय शिक्षाओं के प्रकाश में लागू करना फिजूल है। ''अंत के दिनों में'' वाक्यांश यह संकेत देता है कि यह एक घटना की भविष्यवाणी है जिसमें मसीही युग के आरम्भ की बात होनी थी। भविष्यवाणी के अनुसार एक दिन वहां होने वाली घटना अर्थात कलीसिया के आरम्भ के दूरगामी प्रभाव के कारण भविष्य की सब पीढ़ियों ने यरूशलेम की ओर देखना था। यीशु के पुनरुत्थान के बाद आने वाले पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने समझाया कि ''अंत के दिन'' मसीही युग ही है जिसका आरम्भ पवित्र आत्मा के बहाये जाने और कलीसिया की स्थापना के साथ हुआ (प्रेरितों 2:16-21)।

आइए यशायाह के इस पद को (जो संयोग से एक वक्तव्य है, और मीका 4:1-3 में भी दिया गया है) वह भविष्यवाणी का लैंज़ बनने दें जिसमें से हम कलीसिया के महत्व तथा महिमा को देख सकें। इस पद को हम आने वाले राज्य अर्थात कलीसिया के प्रभाव की भविष्यवाणी का नाम देंगे, परन्तु इस भविष्यवाणी में संकेत देकर हम नये नियम की स्पष्ट शिक्षा वाली कलीसिया की हर विशेषता की पुष्टि भी करेंगे।

यशायाह ने कलीसिया की सुन्दरता को कैसे बयान किया?

इसकी प्रसिद्धि के द्वारा

पहले, यशायाह ने कलीसिया की उस प्रसिद्धि के द्वारा जो उसे मिलनी थी, इसकी सुन्दरता का चित्रण किया। उसने लिखा, ''अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे'' (यशायाह 2:2)। पृथ्वी के सब लोग कलीसिया के सर्वश्रेष्ठ गुणों को पहचानकर इसकी ओर खिंचेंगे।

अलंकार के रूप में कलीसिया का चित्रण यरूशलेम में एक पहाड़ी पर स्थिर यहोवा के भवन के रूप में किया गया है। उस भवन की चमक ने अपनी ओर सब जातियों का ध्यान खींचना था और उन्होंने इस पर चढ़ने के लिए पहाड़ी पर आना था। यशायाह ने कहा कि परमेश्वर के उद्देश्यों से इसके सम्बन्ध के कारण इसने संसार की अन्य सब पहाड़ियों से ऊंचा होना था। नया नियम कलीसिया के विश्वव्यापी आकर्षण को दिखाता है। यीशु ने भी इसके विश्वव्यापी आकर्षण की

भविष्यवाणी की, जब उसने राज्य के विषय में कहा, ''... कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे'' (मत्ती 8:11)।

यीशु ने जैतून के पहाड़ पर अपने उपदेश में जो उसने यरूशलेम पर केन्द्रित रखा था, सुसमाचार के दूर-दूर तक फैलने की प्रतिज्ञा की: ''और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, ...'' (मत्ती 24:14)। मुर्दों में से जी उठने के बाद यीशु ने सुसमाचार को सारे संसार में ले जाने की आज्ञा दी: ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों में सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस 16:15)। पिन्तेकुस्त के दिन ''आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी'' लोगों ने पहली बार सुसमाचार सुना और इसकी बात मानी (प्रेरितों 2:5, 9-11)। ''सारे जगत'' में जाने की आज्ञा देने के तीस वर्ष के अंदर ही, पौलुस कुलुस्से की कलीसिया को लिख सका कि, ''... उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ा, *जिस का प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया;* और जिस का मैं पौलुस सेवक बना'' (कुलुस्सियों 1:23)।

प्रकाशितवाक्य 5:9, 10 में परमेश्वर के सिंहासन पर सुना गया नया गीत एक स्तुतिगान है जो मेमने के लहू के द्वारा हर जाति और गोत्र से आए लोगों के उद्धार में आनन्द करता है। स्वर्ग की सेना गा रही थी, ''तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मोहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।'' अन्य शब्दों में, मसीही युग के दौरान सुसमाचार और कलीसिया से पृथ्वी के सारे लोग आकर्षित होंगे।

प्रतीकात्मक अर्थ में कलीसिया का चित्रण
यरूशलेम में एक पहाड़ी पर स्थित
यहोवा के भवन के रूप में किया गया।
उस भवन की चमक ने
सब जातियों का ध्यान खींचना था
और उन्होंने इस पर चढ़ने के लिए
पहाड़ी पर आना था।

कुछ वर्ष पूर्व, हार्डिंग यूनिवर्सिटी में हॉवर्ड होर्टन हमारे यहां मिशनरी के रूप में आए। मुझे उनका कौतूहल उत्पन्न करने वाला एक उदाहरण याद है: उन्होंने एक मिशनरी के रूप में कई देशों में सेवा की थी और जहां भी वह गए हर जगह लोगों का विश्वास परमेश्वर में पाया था। उन्होंने इसे गणित पढ़ाने की तरह माना। जब संसार भर के सब छोटे बच्चों को यह सिखाया जाता है कि दो और दो चार होते हैं, तो उनके मन में कोई बात होती है जिससे वे कहते हैं कि ''यह सही है। यही सत्य है।'' इसी प्रकार, जब लोगों को सिखाया जाता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने संसार और मनुष्य को बनाया है, वह मनुष्य से प्रेम करता है और मनुष्य का उद्धार चाहता है, तो उनके मनों में कुछ ऐसा है जिसे मानकर वे विश्वास करते और कहते हैं, ''यह सही है। यही सत्य है।''

कलीसिया के लिए यही बात सत्य है। परमेश्वर के वचन के प्रमाण के अलावा जो कलीसिया के मनोहर गुण की पुष्टि करता है, हम भी अपने मनों से ऐसा ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं। जब संसार में रहने वाले सब लोगों को नये नियम की कलीसिया के विषय में सिखाया जाता है, तो उनके मनों में कोई एक सी बात होती है जिस कारण वे इस पुष्टि के साथ जवाब देते हैं ''यही सही होना चाहिए।'' कलीसिया के साथ लोगों का सज़्बन्ध अनुपम है; इसे देखना आश्चर्यचकित करने वाला है। जब लोगों को समझ आ जाती है कि कलीसिया ज़्या है, तो वे गर्मियों में एक बाहरी प्रकाश की चमक की ओर आकर्षित होकर उड़ने वाले पतंगे की तरह इसकी ओर आते हैं। संसार के लोग नये नियम की कलीसिया की सराहना करते हैं।

थोड़ा सा विचार करके कलीसिया की प्रसिद्धि को समझा जा सकता है। जब लोगों को यीशु के लहू के द्वारा उद्धार व अनन्त जीवन मिलता है, तो वे मसीह की देह के रूप में रहते, कार्य करते और परमेश्वर की आराधना करते हैं। उन्हें मसीह का नाम मिल जाता है और वे स्वर्ग में उसकी अनन्त महिमा की ओर देखते हैं। वे उद्धार का संदेश उन लोगों तक ले जाने के लिए जो उद्धारकर्ज़ा को नहीं जानते, एक दूसरे से प्रेम रखते हैं। उसकी कलीसिया होना निश्चय ही अद्‌भुत है! आश्चर्य की बात नहीं कि पृथ्वी की सब जातियां, देश, गोत्र और घराने कलीसिया के महत्व को देखकर इसकी ओर बहते हैं।

इसके प्रचार के द्वारा

दूसरा, यशायाह ने कहा कि कलीसिया की महिमा इसके प्रचार में देखी जाती है। उसने लिखा:

> बहुत से देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। ज़्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा (यशायाह 2:3)।

परमेश्वर के आत्मा का दर्शन एक ऐसे दिन के लिए था जब परमेश्वर का वचन अर्थात सुसमाचार यरूशलेम में यहोवा के भवन से निकलना था।

लोगों ने यहोवा की व्यवस्था पाने के लिए यरूशलेम में यहोवा के भवन की ओर आना था। उन्होंने यह जानते हुए आना था कि उन्हें व्यवस्था के द्वारा चलना चाहिए और परमेश्वर के मार्ग में चलने के लिए यरूशलेम से जाना था। ''अंत के दिनों'' के शुरू होने पर नये युग की शुरुआत के रूप में हर किसी को यरूशलेम की ओर देखने का संकेत देते हुए, ज़ोर यरूशलेम पर दिया गया है, ''... ज़्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।''

नये नियम में यीशु ने यरूशलेम को कलीसिया (या मसीही) युग की शुरुआत का

स्थान बताया। प्रेरितों को दी गई अपनी आज्ञा में, उसने कहा:

> यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और *यरूशलेम से लेकर* सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम *इसी नगर में ठहरे* रहो (लूका 24:46-49)।

इसी प्रकार, स्वर्गारोहण से थोड़ा पहले यीशु ने अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा के लिए यरूशलेम में ठहरने की आज्ञा दी। लूका लिखता है, ''और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की बाट जोहते रहो, ...'' (प्रेरितों 1:4)। दस दिन बाद प्रेरितों पर स्वर्ग से पवित्र आत्मा बहाया गया अर्थात उन्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया गया, और इस प्रकार ''अंत के दिनों'' का आरंभ हो गया (प्रेरितों 2:1-4, 16-21)। पतरस द्वारा आत्मा के बहाये जाने के इस दिन मसीह के जी उठने के सुसमाचार का प्रचार करने के समय रोमी साम्राज्य के अलग-अलग देशों से आए तीन हज़ार लोगों ने सुसमाचार को ग्रहण किया, विश्वास किया, मन फिराया, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 2:41, 47)। प्रेरितों के प्रचार के द्वारा यरूशलेम से प्रभु का वचन निकला, और सारे रोमी साम्राज्य से आए लोग यहोवा के मार्ग में चलने लगे।

इस संसार में वास्तव में कौन सी बात महत्वपूर्ण है? ज़्या धन पाना महत्वपूर्ण है? ज़्या ज्ञान पाना महत्वपूर्ण है? ज़्या संसार में प्रसिद्धि पाना महत्वपूर्ण है? शायद हम में से कोई भी जीवन के श्रेष्ठतम लक्ष्य के रूप में इनमें से किसी की ओर ध्यान नहीं देगा। इसके सत्य होने का एकमात्र कारण यही है कि अब से एक सौ वर्ष बाद हम में से किसी को भी ऐसी प्राप्तियों का कोई लाभ नहीं होगा। इनका महत्व सीमित है, ज़्योंकि ये समय के बंधन में हैं। परन्तु हमारा परमेश्वर के वचन को मानना हमें समय से आगे ले जाकर परमेश्वर द्वारा हमें अनन्तकाल में ग्रहण करने के लिए ''शाबाश'' और अनन्तकाल के स्वागत के लिए ले जाता है (1 यूहन्ना 2:16)। जो लोग परमेश्वर के वचन की शिक्षा देते हैं उन्होंने अपने सीखने वालों को सबसे उज़म हित दिखाया है, ज़्योंकि उन्होंने उन्हें अनन्त जीवन का अवसर दिया है।

कलीसिया का उद्देश्य परमेश्वर के वचन का प्रचार करना ही रहा है। अपने प्रभु की तरह मसीही लोग परोपकारी, करुणामय और दूसरों की सज़्भाल करने वाले होते हैं; परन्तु उसकी तरह यह देखकर कि सुसमाचार हमारे द्वारा और हम से सारी पृथ्वी में पहुंचाया जाता है, हमें ध्यान देना आवश्यक है। पौलुस ने कहा कि कलीसिया ''सत्य का खज़्भा'' है (1 तीमुथियुस 3:15)। पतरस ने छुटकारा पाए हुए लोगों को ''उसके गुण'' का प्रचार करने का आदेश दिया, जिसने हमें अंधकार में से अपने अद्भुत प्रकाश में बुलाया है (1 पतरस 2:9)। कलीसिया की

तुलना हम एक लाइटहाउस से कर सकते हैं जो मनुष्य जाति के समुद्र में सुसमाचार की सर्च लाइट भेजता है। जो प्रकाश हम प्रचार, व्यक्तिगत शिक्षा, पुस्तक-पुस्तिकाओं और मसीह के लिए दैनिक जीवन जीकर संसार के लोगों में भेजते हैं वह सुसमाचार अर्थात वह संदेश है जिससे उनकी आत्माओं का उद्धार हो सकता है (रोमियों 1:16)।

यशायाह ने कहा कि अपने मिशन या उद्देश्य के कारण कलीसिया महिमामय है। यह पृथ्वी पर एकमात्र समूह है जो सब लोगों में सुसमाचार पहुंचाने के ईश्वरीय कार्य को समर्पित है। प्रतिष्ठा बढ़ाने और मेल कराने वाले प्रचार के असर के कारण, पौलुस ने यशायाह को उद्धृत करते हुए कहा, ''उन के पांव ज़्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!'' (रोमियों 10:15ख; यशायाह 52:7 देखिए)। उसकी बातों से लेकर हम कह सकते हैं, ''सारी सृष्टि में परमेश्वर के वचन को पहुंचाने के अपने श्रेष्ठ मिशन के कारण कलीसिया कितनी सुन्दर है।'' कलीसिया के इस सर्वश्रेष्ठ गुण को कौन भूल सकता है।

इसके शांति को बढ़ावा देने के द्वारा

तीसरा, कलीसिया शांति को बढ़ावा देने के कारण सुन्दर है। यशायाह ने कहा:

> वह जाति-जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे (यशायाह 2:4)।

अन्य शब्दों में, पृथ्वी पर शांति कलीसिया में ही होगी।

यशायाह ने भविष्यवाणी में एक ऐसे युग को देखा जब सब देशों के लोग उनके जीवनों पर पड़े परमेश्वर के प्रभाव के द्वारा दीनता से शांति से मिलकर रहेंगे। कलीसिया अर्थात परमेश्वर का राज्य जिसमें उन्होंने प्रवेश करना था, जिन्होंने सुलह और शांति का स्थान होना था न कि लड़ाई-झगड़ों का। उन्होंने लड़ाई-झगड़ा करने वाले लड़ाके गुटों में नहीं बंटना था, बल्कि आत्मा के द्वारा एक होने के लिए मिलना था। युद्ध के हथियार शांतिपूर्ण समाज के हथियारों में बदल जाने थे।

नया नियम पढ़ते हुए, ''शांति'' शब्द की व्यापकता को नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता। परमेश्वर ''शांति का परमेश्वर'' है (रोमियों 15:33)। यीशु शांति लाने के लिए आया। उसके जन्म पर स्वर्गदूतों ने गाया, ''आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो'' (लूका 2:14)। सुसमाचार को ''मेल का सुसमाचार'' (इफिसियों 6:15) कहा जाता है। मसीह ने अविस्मरणीय धन्यवादी ''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, ज़्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे'' (मत्ती 5:9) देकर अपने चेलों को मेल कराने वालों के रूप में भेजा। प्रेरितों को उसके अंतिम शब्द शांति की वसीयत थी: ''मैं तुझ्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुझ्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुझ्हें

नहीं देता: तुज़्हारा मन न घबराए और न डरे'' (यूहन्ना 14:27)।

बपतिस्मा पाए हुए विश्वासियों की एक स्थानीय मण्डली के रूप में पवित्र आत्मा द्वारा दिखाई गई कलीसिया की पहली तस्वीर अलग-अलग देशों से आए कई लोगों का समूह है जो मसीह में एक मन होकर रहते थे: ''और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं'' (प्रेरितों 2:44)। वे प्रतिदिन ''एक मन'' होकर रहते थे (प्रेरितों 2:46)।

हमारे मन जिस सुन्दर गुण को समझ सकते हैं वह परमेश्वर और मनुष्य, मनुष्य और मनुष्य, हमारे अपने मनों में पाई जाने वाली सच्ची शांति है। हमारा संसार अशांति से भरा स्थान है जहां लोग भय, पूर्वाग्रह और झगड़े, घृणा से भरे और मन के बोझ से परेशान हैं। ज़्या ऐसे संसार में शांति के लिए कोई स्थान हो सकता है? हां। नया नियम बताता है कि कलीसिया वह स्थान है।

मैंने पढ़ा है कि एक खोजी व्यक्ति ऐसा जहाज़ बनाना चाहता था जिसमें एक ऐसा कमरा हो जो समुद्री तूफ़ान की लहरों में भी पूरी तरह से शांत हो। तूफ़ान के बीच, विशेष रूप से बनाए गए उस कमरे में शांति के लिए जगह हो। मैं नहीं जानता कि इस महत्वाकांक्षा का ज़्या बना होगा, परन्तु शांत रहने वाले कमरे का विचार पूरी तरह से कलीसिया की तस्वीर है। कलीसिया युद्ध की मार पड़ने वाले, झगड़े से परेशान और क्रोध से भरे संसार के बीच शांति का एक स्थान है।

सच्ची शांति केवल मसीह की देह में ही मिल सकती है। सच्ची शांति पाने के लिए, हमें पहले पाप से उद्धार पाकर परमेश्वर से मेल करने के लिए आना आवश्यक है (रोमियों 5:1); उसके बाद हमें दूसरों के साथ मेल करने की इच्छा करनी आवश्यक है (रोमियों 12:18; मत्ती 5:23-25); फिर एक परिणाम के रूप में हमें परमेश्वर के पास अपनी समस्याओं को लाने पर अपने मनों में शांति दी जाती है (फिलिप्पियों 4:6, 7)। ऐसी शांति केवल मसीह से ही मिलती है। शांति का सम्बन्ध केवल मनोवैज्ञानिक, भौतिक, या सामाजिक नहीं बल्कि आत्मिक तथा उद्धार या मुक्ति से है। फिर तो, हमें आश्चर्य नहीं होता कि यशायाह ने कलीसिया को शांति के स्थान के रूप में दिखाया है।

सारांश

कलीसिया के लहू से खरीदी गई परमेश्वर की महिमा और बुद्धि से चमकने वाली देह है। प्रमुख पहाड़ के रूप में यह सब पहाड़ियों से ऊंची है। सब जातियों ने इसकी महानता देखी और बहकर इसमें आती हैं। इसकी सुन्दरता इसे मिली प्रसिद्धि में, इसके द्वारा किए जाने वाले प्रचार में, और उस शांति में जिसे यह बढ़ावा देती है, देखी जाती है। पृथ्वी पर यह सबसे अर्थपूर्ण मिशन है ज़्योंकि यह सारे संसार में परमेश्वर की व्यवस्था पहुंचाती है। परमेश्वर ने इसमें शांति रखकर इसे पृथ्वी की सब संस्थाओं से ऊंचा किया है।

ज़्या आप कलीसिया के वास्तविक महत्व को जानकर इसकी ओर आकर्षित हुए हैं? ज़्या आप इसमें आने को तैयार हैं? ज़्या आपने अपने मन में कहा है, ''आओ, हम यहोवा

के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे''? आप अभी भी शुरू कर दें तो ज़्यादा देर नहीं हुई है। आप यहोवा की व्यवस्था सीखकर, मसीह की देह में प्रवेश कर सकते हैं, यहोवा के मार्ग में चल सकते हैं, और उस शांति को पा सकते हैं जो वह देता है।

जीवन की समयसारणी में केवल तीन दिन का समय है: कल, आज और कल। एक कल बीत चुका है, और उसे पुराने कपड़े या पुराने अखबार की तरह फैंक देना आवश्यक है। आने वाला कल ही एकमात्र प्रतिज्ञा, आने वाली सज़्भावित वस्तुओं का एक स्वप्न, उन बातों की एक झिलमिलाती तस्वीर हो सकती है। केवल आज ही आपकी समयसारणी में है जिसमें आप कार्य कर सकते हैं। बीते कल से हम सीख सकते हैं, और आने वाले कल के लिए अनुमान लगा सकते हैं, परन्तु कार्य करने के लिए हमारे पास केवल वर्तमान क्षण है। इसी कारण, पौलुस ने लिखा है, ''देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2)। विश्वास (यूहन्ना 8:24), मन फिराव (प्रेरितों 17:30, 31), यीशु का अंगीकार (रोमियों 10:10), और यीशु में बपतिस्मा (रोमियों 6:3) लेकर आज ही यहोवा के भवन में प्रवेश करें (1 तीमुथियुस 3:15)। ज़्या हम कलीसिया को महिमामय देह के रूप में मानते हैं?

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. परमेश्वर ने हमें दो कौन सी पुस्तकें दी हैं? यह भी बताएं कि हम दोनों में से कैसे सीख सकते हैं।
2. पापी से प्रेम करके भी परमेश्वर उसे बदलने की इच्छा कैसे कर सकता है?
3. जब यह कहा जाता है कि यशायाह 2:2-4 दोहरी भविष्यवाणी हो सकती है तो इसका ज़्या अर्थ होता है?
4. सब लोगों के लिए कलीसिया के आकर्षण का वर्णन करें।
5. इस विचार को समझाने के लिए कि कलीसिया का आकर्षण विश्वव्यापी है आप किन पदों का इस्तेमाल करेंगे?
6. वे आयतें बताएं जिनसे संकेत मिलता है कि यीशु ने कलीसिया के आरज़्भ होने के स्थान के लिए यरूशलेम की ओर इशारा किया था।
7. आज कोई यहोवा के मार्ग में कैसे चल सकता है?
8. संसार में वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण ज़्या है?
9. यीशु द्वारा अपनी कलीसिया को दिए गए वास्तविक मिशन की चर्चा करें।
10. सच्ची शांति कैसे आती है?
11. यशायाह ने कलीसिया को शांति के राज्य के रूप में ज़्यों दिखाया?
12. सच्ची शांति कहां मिलती है?
13. आज ''कलीसिया'' को कहां पाया जा सकता है?